

**U R**  
**WELCOME TO**  
**BABY BULLET DIGI WORLD**

**SOLVED**  
**PRACTICE PAPER-2**

# PRACTICE PAPER -2

Time: 3 hrs

SR.SANSKRIT

Max. Marks: 100

## I. एकस्य श्लोकस्य प्रतिपदार्थ भावं लिखत ।

1 × 8 = 8

अ) सद्भिस्तु लीलया प्रोक्तं शिलालिखितमक्षरम् ।

असद्भिः शपथेनापि जले लिखितमक्षरम् ॥

आ) उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा ।

सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ॥

## II. एकं निबन्धप्रश्नं समाधत्त ।

1 × 6 = 6

अ) श्री ओगटि परीक्षित् शर्मभिः कृतं षड् ऋतुवर्णनम् विवृणुत ?

आ) विवेकानन्दः इति पाठ्यभागस्य सारांशं सङ्ग्रहेण लिखत ।

## III. एकं निबन्धप्रश्नं समाधत्त ।

1 × 6 = 6

अ) "धर्मपरीक्षा" इति पाठ्यभागस्य सारांशं लिखत ।

आ) "गद्यनैषधम्" इति पाठ्यभागस्य सारांशं लिखत ।

## IV. त्रयाः प्रश्नाः समाधेयाः ।

3 × 2 = 6

अ) कदा शकुन्तलायाः उत्सवः भवति ?

आ) कः पापशङ्की ?

इ) रघुमहाराजः किं यागं कृतवान् ?

ई) कौत्सः कियत् गुरुदक्षिणां दातुं गुरुणा आदिष्टः ?

उ) इन्द्रः पथिकाय किं ददाति ?

ऊ) देवानाम् अधिपः कः ?

## V. द्वयोः ससन्दर्भ व्याख्यात ।

2 × 3 = 6

अ) गुहां विविक्षुः प्रससार मेरोः ।

आ) शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः ।

इ) सस्यावृतो जीवन - जीवदायी ।

ई) अद्योतयद्यं मणिदीप रूपः ।

## VI. द्वयोः ससन्दर्भ व्याख्यात ।

2 × 3 = 6

- अ) जितेन्द्रियत्वाद् ब्रह्मर्षिरसि ।
- आ) परेषामपि रक्ष जीवितम् ।
- इ) दुः खिषु करुणा हि महतां शैली ।
- ई) मित्रजिदप्यमित्रजित् ।

## VII. त्रयाः प्रश्नाः समाधेयाः ।

3x2=6

- अ) दुर्वासाः कुत्र निममज्ज ?
- आ) कीदृशं वचः दुर्लभम् ?
- इ) केषां वसुधैक कुटुम्बकम् भवति ?
- ई) धीमतां कालः कथं गच्छति ?
- उ) ऋतुषट्कम् इति पाठ्यभागः कस्मात् काव्यात् स्वीकृतम् ?
- ऊ) नरेन्द्रः एकं पादं कुत्र निदधाति ?

## VIII. त्रयाः प्रश्नाः समाधेयाः ।

3 × 2 = 6

- अ) शतानन्दस्य मातापितरौ कौ ?
- आ) बुधैः प्राणिनः कस्मात् त्रातव्याः ?
- इ) कं दुस्स्वप्नमिव न स्मरति ?
- ई) बाणभट्टः कस्य आस्थाने आसीत् ?
- उ) "धर्मपरीक्षा" इति पाठ्यभागः कस्मात् स्वीकृतः ?
- ऊ) कदा नलः जगज्जिगाय ?

## IX. एकेन पदेन समाधेयः।

5 × 1 = 5

- अ) दुर्वासाः कां निर्ममे ?
- आ) मतङ्गजेन स्रगिव धर्मजेन का अपवर्जिता ?
- इ) कृतमुपकारं के न विस्मरन्ति ?
- ई) शीतोष्णसमानदर्शी ऋतुः कः ?
- उ) नरेन्द्रसाहचर्येण सहपाठिनः किं लभन्ते ?

## X. एकेन पदेन समाधेयः।

5 × 1 = 5

- अ) कुशिकनन्दनः कः ?  
 आ) पर्वतसमीपे स्थितस्य नगरस्य नाम किम् ?  
 इ) तारापीडराजस्य प्रथिताभिधानः अमात्यवृषभः कः ?  
 ई) देवपुर्या युधिष्ठिरः वासवमिव कं दृष्टवान् ?  
 उ) नलः कीदृशं कोशं प्रणिनाय ?

## XI. अधोनिर्दिष्ट कथां पाठित्या प्रश्नानां समाधानानि दत्त।

5 × 1 = 5

कस्मिंश्चित् नगरे कश्चन निर्धनः ब्राह्मणः वसति स्म । सः भिक्षाटनेन जीवनं करोति स्म। कदाचित् सः पिष्टेन पूर्णम् एकं घटं प्राप्तवान् । तं घटं नागदन्ते अवलम्ब्य तस्य अधः उपविश्य सः एकदृष्ट्या घटमेव पश्यति स्म।

एकदा रात्रौ सः चिन्तितवान् - 'यदि देशे दुर्भिक्षं भवेत् तर्हि एतस्य शतरूप्यकाणां मूल्यं भवेत्। तदा अहम् एतत् विक्रीय तेन धनेन अजद्वये क्रेष्यामि । कालान्तरे तेन अजसमूहः एव भविष्यति । अनन्तरम् अजसमूहं विक्रीय धेनूः क्रेष्यामि। अनन्तरं ताः विक्रीय महीषीः ताः विक्रीय अश्वन् च क्रेष्यामि। तान् अपि विक्रीय यथेष्टं धनं सम्पदायिष्यामि। बृहत् गृहं निर्मापयिष्यामि। तदा कश्चिद् रूपवतीं स्वकन्यां मह्यं दास्यति। अनन्तरं मम पुत्रः जनिष्यते। देवशर्मा इति तस्य नामकरणं करिष्यामि। यदा सः जानुभ्यां चलितुं समर्थः भविष्यति, तदा देवशर्मा जानुभ्यां चलन् मम समीपम् आगन्तुम् उद्युक्तः भविष्यति। तदा तं बालं ग्रहीतुं तस्य मातरम् आज्ञापयिष्यामि। यदा सा मम वचनं न श्रोष्यति तदा अहं कोपेन पादप्रहारेण तां दण्डयिष्यामि'' इति।

प्रश्नाः

- अ) कस्मिंश्चित् नगरे कः वसति स्म?  
 आ) निर्धनः केन जीवनं करोति स्म?  
 इ) ब्राह्मणः किं प्राप्तवान्?  
 ई) देवशर्मा काभ्यां चलितुं समर्थः भविष्यति?  
 उ) पिष्टेन पूर्णः घटः किम् अभवत्?

**XII. त्रीणि सन्धिनामनिर्देशपूर्वकं सन्धत्त।** $3 \times 2 = 6$ 

- अ) सद् + जनः      आ) उद् + डयनम्      इ) षट् + आननः  
 ई) जगत् + नाथः      उ) कः + अपि      ऊ) नृपतिः + जयति

**XIII. नामनिर्देशपूर्वकं त्रीणि विघटयत।** $3 \times 2 = 6$ 

- अ) जगज्जननी      आ)रामष्ष्टः      इ) तदपि  
 ई) षण्मुखः      उ) रामोऽपि      ऊ) हरिर्गच्छति

**XIV. द्वयोः शब्दयोः सविशक्तिक रूपाणि लिखत।** $2 \times 6 = 12$ 

- अ) मरुत्      आ) स्रज्      इ) महत्      ई) एतद्

**XV. समासनामनिर्देशपूर्वकं त्रयाणां विग्रहवाक्यानि लिखत।** $3 \times 2 = 6$ 

- अ) शिवकेशवौ      आ) नवरात्रम्      इ) शाकप्रति  
 ई) उत्तरकायः      उ)विन्ध्यपर्वतः      ऊ)सहपुत्रः

**XVI. अधोनिर्दष्टपट्टिकामाधारीकृत्य पञ्चसाधुवाक्यानि लिखत** $5 \times 1 = 5$ 

|      |        |        |
|------|--------|--------|
| भरतः | फलं    | खादामि |
| सा   | पाठं   | पठसि   |
| त्वं | चित्रं | पश्यति |
| अहं  | देवं   | पिबति  |
| लता  | क्षीरं | पूजयति |

# PRACTICE PAPER-2

## ANSWERS

I. एकस्य श्लोकस्य प्रतिपदार्थ भावं च लिखत ।

1 × 8 = 8

अ) सद्भिस्तु लीलया प्रोक्तं शिलालिखितमक्षरम् ।

असद्भिः शपथेनापि जले लिखितमक्षरम् ॥

स. कविपरिचयः- अयं श्लोकः 'सूक्तिरत्नावली' इति पाठ्यभागात् स्वीकृतः।

अस्य कर्तारः विविधकवयः।

पदविभागः- सद्भिः, तु, लीलया, प्रोक्तं, शिलालिखितम्, अक्षरम् ।

असद्भिः, शपथेन, अपि, जले, लिखितम्, अक्षरम् ॥

తెలుగు అన్వయక్రమ :-

సద్भिః, లీలయా, ప్రోక్తం, శిలాలిఖితమ్, అక్షరమ్, తు, అసద్భిః, శపథేన, అపి, జలే, లిఖితమ్, అక్షరమ్ ।

ప్రతిపదార్థ:

|             |   |                              |
|-------------|---|------------------------------|
| సద్भिః      | = | సజ్జనులచేత                   |
| లీలయా       | = | మాటవరసకి                     |
| ప్రోక్తం    | = | చెప్పబడిన మాట                |
| శిలాలిఖితమ్ | = | రాతిమీద రాసిన                |
| అక్షరమ్     | = | అక్షరంలా ఉంటుంది             |
| తు          | = | కానీ                         |
| అసద్భిః     | = | దుర్జనులచేత                  |
| శపథేన       | = | ప్రతిజ్ఞ చేసి చెప్పినప్పటికీ |
| అపి         | = | కూడా                         |
| జలే         | = | నీటి యందు                    |
| లిఖితమ్     | = | వ్రాయబడిన                    |
| అక్షరమ్     | = | అక్షరంలాంటిది                |

भाव:- సజ్జనుల చేత మాటవరసకి చెప్పబడిన మాట రాతిమీద రాసిన అక్షరంలా ఉంటుంది. కానీ దుర్జనులచే ప్రతిజ్ఞ చేసి చెప్పిన మాట కూడా నీటిలో రాసిన అక్షరంలా ఉంటుంది.

English అన్వయక్రమ :-

లీలయా, ప్రోక్తం, సద్भिః, అక్షరమ్, శిలాలిఖితమ్, తు, అపి, అసద్భిః, శపథేన, అక్షరమ్, లిఖితమ్, జలే ।

ప్రతిపదార్థ:

|             |   |                     |
|-------------|---|---------------------|
| లీలయా       | = | Casually            |
| ప్రోక్తం    | = | spoken word         |
| సద్भिః      | = | by a good person    |
| అక్షరమ్     | = | is like a letter    |
| శిలాలిఖితమ్ | = | written on a stone. |
| తు          | = | But                 |
| అపి         | = | even                |
| అసద్భిః     | = | wicked person's     |
| శపథేన       | = | oath (is)           |
| అక్షరమ్     | = | like a letter       |
| లిఖితమ్     | = | written             |
| జలే         | = | on water            |

भाव:- A word casually spoken by a good person is like a letter written on stone. But even a wicked person's oath is like a letter written on water.

आ. उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा । ఉదయే సవితా రక్తో రక్తశ్చాస్తమయే తథా ।

सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ॥ సంపత్తౌ చ విపత్తౌ చ మహతామేకరూపతా ॥

स. कविपरिचय:- अयं श्लोकः 'सूक्तिरत्नावली' इति पाठ्यभागात् स्वीकृतः।

अस्य कर्तारः विविधकवयः।

पदविभाग:- उदये, सविता, रक्तः, रक्तः, च, अस्तमये, तथा,  
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतां एकरूपता॥

తెలుగు అన్వయక్రమ :-

సవితా, ఉదయే, రక్తః, చ, అస్తమయే, రక్తః  
తథా, సమ్పత్తౌ, చ, విపత్తౌ, చ, మహతాం, ఐకరూపతా ।

ప్రతిపదార్థ:

|          |   |                         |
|----------|---|-------------------------|
| సవితా    | = | సూర్యుడు                |
| ఉదయే     | = | ఉదయించేవేళ              |
| రక్తః    | = | ఎర్రగా ఉంటాడు           |
| చ        | = | మరియు                   |
| అస్తమయే  | = | అస్తమించేవేళ            |
| రక్తః    | = | ఎర్రగా ఉంటాడు           |
| తథా      | = | అదేవిధంగా               |
| సమ్పత్తౌ | = | సంపదలు కలిగినప్పుడు     |
| చ        | = | మరియు                   |
| విపత్తౌ  | = | అపదలు కలిగినప్పుడు కూడా |
| చ        | = | కూడా                    |
| మహతాం    | = | గొప్ప వారికి            |
| ఐకరూపతా  | = | ఒకే రూపం (ఉంటుంది)      |

भाव:- సూర్యుడు ఉదయించేవేళ, అస్తమించేవేళ కూడా  
ఎర్రగానే ఉంటాడు. అదేవిధంగా మహానుభావులు తమకు  
సంపదలు కలిగినా, అపదలు కలిగినా ఒకే విధంగా  
ప్రవర్తిస్తారు .

English అన్వయక్రమ :-

సవితా, రక్తః, ఉదయే, చ, రక్తః అస్తమయే,  
తథా, మహతాం, ఐకరూపతా, సమ్పత్తౌ చ, విపత్తౌ చ ।

ప్రతిపదార్థ:

|          |   |                     |
|----------|---|---------------------|
| సవితా    | = | The Sun             |
| రక్తః    | = | appears red         |
| ఉదయే     | = | at sunrise          |
| చ        | = | and also (it)       |
| రక్తః    | = | appears red         |
| అస్తమయే  | = | at sunset.          |
| తథా      | = | Similarly           |
| మహతాం    | = | great people        |
| ఐకరూపతా  | = | remains the same    |
| సమ్పత్తౌ | = | in prosperity (and) |
| విపత్తౌ  | = | in difficulty       |

भाव:- The Sun appears red at sunrise and it  
also appears red at sunset. Similarly, great people  
remain the same in prosperity and in difficulty.

## II. एकं निबन्धप्रश्नं समाधत्त ।

1 × 6 = 6

अ) श्री ओगटि परीक्षित् शर्मभिः कृतं षड् ऋतुवर्णनम् विवृणुत ?

स. परिचय: “ఋతుషట్కమ్” అనే పాఠ్యభాగం యశోధరా మహాకావ్యంలోని 7 వ సర్గ నుండి గ్రహించబడింది.

దీనిని రచించిన కవి శ్రీ ఓగేటి పరీక్షిత్ శర్మగారు. ప్రస్తుత పాఠ్యభాగంలో ఆరు ఋతువులు సుందరంగా వర్ణించబడినాయి. సందర్భానుసారంగా యశోధరా, గౌతమబుద్ధులతో కొన్ని ఋతువులను పోల్చడం జరిగింది.

వసంత ఋతువు: ఋతువులలో మొదటిది వసంత ఋతువు. ఈ ఋతువుతో కొత్త సంవత్సరం వస్తుంది. ప్రజలు ప్లద్రుచులతో కూడిన వేప పచ్చడిని సేవించి, కొత్త ఆశలతో ఉత్సాహాన్ని నింపుకుంటారు. सत्वं ननु चेतनं सदा। వసంత కాలం స్వచ్ఛమైన గాలిని మోసుకొస్తుంది. వసంత ఋతువులో లతలూ, చెట్లూ చిగురిస్తాయి. కోయిలలు, తుమ్మెదలు, పక్షులు, సరోవరాలు అహ్లాదాన్ని కల్గిస్తాయి.

గ్రీష్మ ఋతువు: గ్రీష్మ కాలంలో సూర్యుడు లోకాన్ని ప్రచండమైన అగ్నివలే తపింపజేస్తాడు. गभस्तिमान् नैव सहिष्णु भावः । గ్రీష్మ ఋతువులో ఈ లోకం సూర్యుడి యొక్క తీవ్రమైన ఎండతో మండిపోతుంటుంది. ग्रीष्मतौ जगत् प्रचण्ड सूर्यातप दीपितं बभूव। ప్రజలందరూ ఎండ వేడికి అల్లాడుతుంటారు.

వర్ష ఋతువు: వర్ష ఋతువు దట్టమైన మేఘాలతో నిండి ఉంటుంది. सान्द्रघनावृतः ऋतुः वर्षऋतुः మెరుపులతో నీటి తుంపరలతో ప్రకృతి అందంగా ఉంటుంది. కప్పల బెకబెకలు పండితులు వల్లవేస్తున్న వేదాలుగా వినబడుతుంటాయి. పురివిప్పిన నెమళ్ళు నాట్యాలతో, తుంపరలతో కూడిన నీటి బిందువులతో ప్రకృతి సుందరంగా కనిపిస్తుంది. మేఘాలు సంపదలని వర్షిస్తున్నట్లుగా ఉంటాయి. యశోధర యొక్క కలువ లాంటి కళ్ళు బుద్ధుడి విరహంతో దుఃఖాన్ని వర్షిస్తాయి.

శరద్రుతువు : శరద్రుతువులో మేఘాలు తెల్లపోతాయి. నక్షత్రాలు మినుకు మినుకు మంటూ ప్రకాశిస్తాయి. కార్తీక పున్నమిలో నిండు చంద్రుడు పండు వెన్నెలని వెదజల్లుతాడు. సముద్రం నిర్మలమైన కెరటాలతో ఆహ్లాదపరుస్తుంది. తామరపువ్వులతో, తెల్ల కలువలతో శరత్కాలం జ్ఞాన సరస్వతిలా శోభిస్తుంది. శరద్రుతువు అందంలో యశోధరలా శాంతంలో బుద్ధునిలా ఉంటుంది.

హేమంత ఋతువు: హేమంత ఋతువు తీవ్రమైన చలి పొగమంచుతో జనుల్ని వణికించిన మనోరంజకంగా ఉంటుంది. सस्यावृतो जीवन जीवदायी రకరకాల పంటలు ఇళ్లకు చేరతాయి. సూర్య సంక్రమణంతో ప్రజలు శీతోష్ణాలని సమానంగా అనుభవిస్తారు. పొగమంచు యశోధర దుఃఖం నుండి వుట్టిన పొగలా ఉంటుంది.

శిశిర ఋతువు : శిశిర ఋతువు రాకతో దేశమంతా వెలవెల పోతుంది. చలికి చర్మం పగిలి, శివ శివా రక్షించమంటూ వేడుకుంటారు. ప్రకృతిని వికృతిగా చేస్తుంది. శిశిర ఋతువు ప్రజలలో జడత్వాన్ని కలిగిస్తుంది. అకులనే వస్త్రాలు జారిపోయి కర్రలాంటి శరీరంతో మిగులుతుంది.

**स. Introduction:** The lesson “**Ruthu Shatkam**” is extracted from the 7<sup>th</sup> Canto of the epic “**Yashodhara Mahakavya**”. This was composed by the poet **Sri Ogeti Parikshit Sharma**. In the current lesson, the six seasons are beautifully described. Depending on the context, certain seasons have also been compared to Yashodhara and Gautama Buddha.

**Vasanta Ruthu (Spring Season):** The first of the seasons is Vasanta Ruthu. The new year begins with this season. People consume tender neem leaves mixed with jaggery (*Vepapachadi*) to fill themselves with enthusiasm and new hopes. सत्वं ननु चेतनं सदा। Springtime brings a pure, refreshing breeze. During this season, creepers and trees sprout new leaves. Cuckoos, bumblebees, birds, and ponds create a joyful atmosphere.

**Greeshma Ruthu (Summer Season):** During the summer season, the sun scorches the world like a fierce fire. गभस्तिमान् नैव सहिष्णु भावः । In Greeshma Ruthu, the earth burns under the intense heat of the sun. ग्रीष्मर्तौ जगत् प्रचण्ड सूर्यातप दीपितं बभूव। All living beings suffer due to the extreme heat.

**Varsha Ruthu (Monsoon Season):** The monsoon season is filled with dense, dark clouds. सान्द्रघनावृतः ऋतुः वर्षऋतुः Nature looks beautiful with flashes of lightning and gentle water sprays. The croaking of frogs sounds like Vedic hymns being chanted by scholars. Nature appears stunning with dancing peacocks spreading their feathers and falling water droplets. It looks as though the clouds are showering wealth. Meanwhile, Yashodhara’s lotus-like eyes shed tears of grief due to her separation from Buddha.

**Sharad Ruthu (Autumn Season):** In the autumn season, the clouds turn white. Stars twinkle brightly in the night sky. On the full moon day of Kartika (*Kartika Purnami*), the full moon spreads ripe, beautiful moonlight. The ocean feels delightful with calm, clear waves. Filled with lotuses and white lilies, autumn shines like Goddess Saraswati (the goddess of knowledge). While the beauty of the autumn season is serene like Yashodhara, its peaceful calmness resembles Buddha.

**Hemanta Ruthu (Pre-Winter Season):** Hemanta Ruthu is pleasing yet bone-chilling, filled with intense cold and thick fog. सस्यावृतो जीवन जीवदायी Various types of harvested crops reach people’s homes. With the winter solstice (*Surya Sankramana*), people experience balanced weather conditions. The dense fog resembles the smoke rising from the fire of Yashodhara’s deep sorrow.

**Shishira Ruthu (Winter Season):** With the arrival of Shishira Ruthu, the entire country looks pale and desolate. Due to the biting cold, people’s skin cracks, and they pray for protection, chanting “Shiva, Shiva”. It makes nature look distorted and withered. Shishira Ruthu brings a sense of lethargy among people. Trees shed their leaves as if losing their clothes, leaving behind bare, stick-like branches.

## आ) विवेकानन्दः इति पाठ्यभागस्य सारांशं सङ्ग्रहेण लिखत ।

स. परिचयः “विवेकानन्दः” अने पार्थक्यभागं विवेकानन्दं अने पद्म काव्यं नुचि स्वीकरीचबडिंदी.

श्री सन्निधानं सूर्यनारायणशास्त्री गारु ఈ కావ్యాన్ని రచించారు.

సరేంద్రుని బాల్యం: బాల సరేంద్రుడు నక్షత్రాల మధ్యలో చంద్రుడిలా, చెట్ల మధ్యలో చందనపు చెట్టులా పరిమళించేవాడు. ఆహ్లాదాన్ని కలిగిస్తాడు. హారాలలో ఉన్న మణిలా ప్రకాశించేవాడు. తరగతిలోని పిల్లలందరిలో ప్రముఖుడిగా ఉండేవాడు. తోటి పిల్లలందరికీ సరేంద్రుడంటే ఎంతో ఇష్టం. వారు అతనితో ఎంతో సంతోషాన్ని పొందేవారు.

సరేంద్రుని విద్యాభాసం: సరేంద్రుడు విద్యాలయానికి చంద్రుడిలా అపూర్వతేజస్సుతో ప్రకాశించేవాడు. విద్యాలయస్య అయమ్ అపూర్వతేజ: అతడు పాఠశాలకు రాని రోజున పిల్లలకు అమావాస్య లాగా ఉండేది. వచ్చిన రోజు పౌర్ణమీ. ఆటలంటే సరేంద్రుడికి ప్రాణం. అందుకే ఒక అడుగును ఆటస్థలంలో కూడా ఉంచేవాడు.

సరేంద్రుని నాయకత్వ లక్షణాలు: సరేంద్రుడు నాయకత్వపు లక్షణాలను బాల్యం నుంచే పుణికిపుచ్చుకున్నాడు. మొదటిగా తన తరగతికి, తర్వాత పాఠశాలకి, ఆ తర్వాత ఉన్నతోన్నతుడిగా, చివరికి వామనుడిలా ప్రపంచానికే నాయకుడిగా నిలిచాడు. పాలు తాగే ఈ పిల్లవాడికి ఇంతటి సమాధినిష్ఠత ఎలా వచ్చింది? బహుశా ద్రువుడే మళ్ళీ ఇలా జన్మించాడా లేక దివి నుండి భువికి జారిన దేవర్షినా అని ప్రజలు చర్చించుకునేవారు. ఆహ్లాదయత్యేవ हि केतकस्य ।

సరేంద్రుని ప్రతిభ: సరేంద్రుడు తన రూపంతో, శీలంతో అందరిని ఆకట్టుకొనేవాడు. యుక్త వయస్సుకి వచ్చిన సరేంద్రుడు బాల్యంతో పాటు పాఠశాలని వదిలేశాడు. అద్యోతయత్ యం మణిదీపరూప: । కళాశాలలో సరేంద్రుడు వ్యాసరచన, వక్తృత్వం, చర్చలు వంటి పోటీలలో పాల్గొని ఎన్నో బహుమతులు సంపాదించాడు. చదువులోనే కాక, వంట చేయడం, కుస్తీపట్టడం, సంగీతం వంటి విద్యలలో కూడా రాణించాడు. అతడి మల్లయుద్ధాన్ని చూసి ప్రత్యర్థులు వెనక్కుతగ్గేవారు. అతడి గానానికి కోకిల మూగపోయేది.

సరేంద్రుని స్వరూపం: విద్యలలో సరస్వతీ సమానుడు, రూపంలో మన్మథ సముడు, కళలలో నైపుణ్యం, వాదనలో ఎదురు లేనివాడు. విద్యార్థులే కాక, ఆచార్యులు, ప్రాచార్యులు కూడా సరేంద్రుడిని గౌరవించేవారు. వారి కళ్ళకు సరేంద్రుడు సహస్ర భానుడిలా తోచేవాడు.

సరేంద్రుని వైరాగ్య వైఖరి: తోటివారు వివాహాలు చేసుకుంటుంటే సరేంద్రుడు మరాల వైపు దారితీశాడు. స్నేహితులు పట్టుబట్టలు కట్టి విహరయాత్రలు చేస్తుంటే, సరేంద్రుడు కాషాయధారణ చేసి తీర్థయాత్రలు చేసేవాడు.

ప్రజలందరి మాటలకు సరేంద్రుడు మనస్సులో ఇలా చింతించేవాడు. “ఈ సంసారం లోతైన బావి, ముళ్ళతో నిండిన అడవి లాంటిది, దీనిలో నుండి బయటకు రాలేరు. సంసారం దుఃఖానికి కారణమవుతుంది. బ్రహ్మదేవుడు నుండి చీమ వరకు అందరూ సంసార సాగరంలో చిక్కుకున్నవారే. అయ్యో ! ఈ పిచ్చి జనులందరూ తమంతట తాముగా సంసారంలో బంధించబడుతున్నారే” .

**स. Introduction:** The lesson “Vivekananda” is extracted from the poetic work titled “Vivekanandam”. It was composed by **Sri Sannidhanam Suryanarayana Sastri Garu.**

**Narendra's Childhood:** Young Narendra flourished like the moon among stars and like a sandalwood tree among ordinary trees. He would shine like a radiant gem in a garland. He stood out prominently among all the children in his class. All his peers were extremely fond of Narendra and spent their time happily in his presence.

**Narendra's Education :** "Narendra used to shine with an extraordinary brilliance like the moon for the school." विद्यालयस्य अयम् अपूर्वतेजः। On the days when he did not attend school, it felt like a dark- moon night to the other children. The days he arrived felt like a bright, full-moon night . Narendra was passionate about games. That is why he always used to keep one foot in the playground as well.

**Narendra as a Leader :** Narendra possessed leadership qualities right from his childhood. He stood as a leader first for his class, then for his school, subsequently moving on to higher levels, and ultimately emerging like Vamana as a leader to the entire world. People would wonder: “How did this young boy, who still drinks milk, attain such profound deep meditation. Has the mythological boy Dhruva been reborn like this, or is he a divine being who descended from heaven to earth?”

आह्लादयत्येव हि केतकस्य।

**Narendra's Talent:** Narendra captivated everyone with his handsome appearance and exemplary character. As he transitioned into youth, he left both his childhood and his school days behind.

अद्योतयत् यं मणिदीपरुपः। In college, Narendra participated in competitions such as essay writing, elocution, and debates, winning numerous prizes. He excelled not only in academics but also in skills like cooking, wrestling, and music. Witnessing his prowess in wrestling, his opponents would back down in fear. Hearing his soulful singing, even the cuckoo bird would fall silent in awe.

**Narendra's Nature :** He was equal to Goddess Saraswati in wisdom, matched Manmatha (the God of Love) in beauty, possessed exceptional mastery over arts, and remained unmatched in debates and arguments. Not just fellow students, but also teachers and principals deeply respected Narendra. To their eyes, Narendra appeared as radiant as the thousand-rayed sun.

**Narendra's Path of Renunciation :** While his peers were getting married, Narendra set his path toward spiritual liberation (*Mukti*). While his friends packed their bags for pleasure trips and excursions, Narendra donned saffron robes and went on holy pilgrimages.

Reflecting on the lifestyle of common people, Narendra would contemplate in his heart:

“This worldly life (*Samsara*) is like a deep well, a forest filled with thorns from which people cannot escape. Worldly attachments become the root cause of misery. From Lord Brahma down to a tiny ant, everyone is caught up in this ocean of worldly illusions . Alas! These foolish people are willingly binding themselves to this worldly life.”

## III. एक निबन्धप्रश्न समाधत्त ।

1 × 6 = 6

అ) "ధర్మపరీక్షా" ఇతి పాద్యభాగస్య సారాంశం లిఖత ।

స. పరిచయ: ధర్మపరీక్ష అనే పాఠ్యభాగం భారత సంగ్రహంలోని మహాప్రస్థాన పర్వం మరియు స్వర్గారోహణ పర్వం నుండి స్వీకరించబడింది. దీనిని రచించినది శ్రీ లక్ష్మణసూరి.

పాండవుల మహాప్రస్థానం: వ్యాసుని ఆదేశంతో పాండవులు మహాప్రస్థానంపై దృష్టి సారిస్తారు. తమ మనుమడైన పరీక్షిత్తును మహారాజుగా చేసి ఉత్తర దిక్కుగా బయలు దేరతారు. ఒక కుక్క కూడా వీరిని అనుసరిస్తుంది. దారిలో మేరుపర్వత సమీపంలో ద్రౌపది పడిపోయింది. క్రమంగా నకుల సహదేవులు, అర్జునుడు పడిపోయారు. భీముడు కూడా పడిపోతూ ఇలా రాలిపోవడానికి కారణం ఏమిటని ధర్మరాజుని ప్రశ్నించాడు. వ్యర్థమైన ప్రతిజ్ఞల వలన అర్జునుడు, నిన్ను నీవు పొగుడుకోవటం వలన నీవు పతనమయ్యావు **परबलम् अविज्ञायैव स्वबलश्लाघी** అని ధర్మరాజు సమాధానం చెబుతాడు.

ధర్మపరీక్ష: ఇంతలో దివ్యవిమానంలో దేవేంద్రుడు వచ్చి ధర్మరాజుని సశరీరంగా స్వర్గానికి తీసుకువెళ్తానంటాడు. తన భార్య, తమ్ముళ్ళు, కుక్కతో కలసి వస్తానన్నాడు ధర్మరాజు. స్వర్గమైనా, నరకమైనా వారితో కలిసే పంచుకుంటానన్నాడు. నీ తమ్ముళ్ళూ, భార్య స్వర్గానికి చేరుకున్నారని కావున కుక్కని వదలి రమ్మంటాడు దేవేంద్రుడు. నా కష్టాలలో కూడా ఈ కుక్క నన్ను విడిచిపెట్టలేదు. మనల్ని ఆశ్రయించే వారిని విడిచిపెట్టడం నరకానికి కారణం అవుతుంది **आश्रितत्यागी नारकी स्यादिति न खुलु** । అంటాడు ధర్మరాజు.

యమధర్మరాజు యుధిష్ఠిరుడిని ప్రశంసించుట: ధర్మరాజుకు తన నిజరూపాన్ని చూపించటానికి కుక్క రూపాన్ని విడిచి నిజరూపాన్ని ధరించాడు యమధర్మరాజు. “నాయనా! నేను నీ తండ్రిని, నిన్ను పరీక్షించటానికి కుక్క రూపంలో వచ్చాను. నీ సమవర్తిత్వం చాలా గొప్పది” అంటూ యుధిష్ఠిరుడిని విమానం ఎక్కించాడు. స్వర్గంలో అడుగుపెడుతూనే అక్కడ ఇంద్రుడిలా ఉన్న దుర్యోధనుడిని చూసి కోపంతో వెనుతిరిగాడు. తన సోదరులు ఎక్కడని నారదుడిని ప్రశ్నించాడు.

నరకంలో ధర్మరాజు : ఓ రాజా! ‘నీ వాళ్ళను చూడాలనుకుంటే నాతో రా’ అని ఒక దేవదూత ధర్మరాజుని నరక మార్గానికి వెంటపెట్టుకెళ్ళాడు. ఆ దారంతా చీకటి ముళ్ళు, రాళ్ళు, పాములూ, కీటకాలతో నిండి ఉంది. ఇసుక కాలిపోతుంది, దుర్గంధం వలన ఒక్క అడుగు కూడా ముందుకు వేయలేనన్నాడు ధర్మరాజు. రాజా ! వెళ్ళవద్దు, ఒక నిమిషం ఉండు, నీ రాకతో మా బాధలు తొలగిపోతున్నాయి, **दुःखिषुकुरुणा हि महातां शैली ।** ద్రుక్షంలో ఉన్నవారికి కరుణ కురిపించటమే గొప్పవారి పద్ధతి. నరకంలో ఉన్న మమ్మల్ని కాపాడు. నేను అర్జునుడిని, నేను భీముడిని అంటూ ఒకొక్కరూ తమ పేర్లు చెప్పుకున్నారు.

దేవేంద్రుని ప్రశంస : అయ్యో! నా వారంతా నరకంలో ఉంటే నేను స్వర్గానికి రాలేనని దేవదూతను పంపించివేస్తాడు ధర్మరాజు. ఆ వెంటనే నరకం మాయమైపోతుంది. ఇంద్రుడు ప్రత్యక్షమై ఓ రాజా! నీవు అజాత శత్రువువి, ద్రోణాచార్యుడిని కపటంతో జయించటం వల్లే నీకు ఈ నరకం. సుకృతం యొక్క ఫలమే స్వర్గం. దుష్కృతం యొక్క ఫలమే నరకం. రాజసూయాగం, ఆశ్వమేధ యాగాల వచ్చిన పుణ్యఫలంతో నీవు స్వర్గాన్ని అనుభవించు అన్నాడు దేవేంద్రుడు.

ధర్మరాజు సకుటుంబంగా స్వర్గానికి వెళ్లుట: యమధర్మరాజు, “నాయనా నీలాంటి పుత్రుడి వలన నా జన్మ ధన్యం. నిన్ను ఆశ్రయించిన వారి కోసం నీ సుఖాన్ని వదిలేసే ధర్మశీలత నీది అన్ని విధాలా పొగడదగినవాడివి” అంటూ కౌగిలించుకొన్నాడు. పిదప దేవేంద్రుడు, యమధర్మరాజుల అనుమతితో యుధిష్ఠిరుడు సకుటుంబంగా స్వర్గ సుఖాలను అనుభవించాడు.

**स. Introduction:** The lesson titled “**Dharma Pareeksha**” is extracted from the *Mahaprasthan Parva* and *Svargarohana Parva* sections of *Bharata Sangraham*. It was composed by **Sri Lakshmanasuri**.

**Pandava's Mahaprasthanam:** Following the instructions of Sage Vyasa, the Pandavas set their minds on the *Mahaprasthanam*. Making their grandson Parikshit the king, they set out toward the northern direction. A stray dog also followed them. Near Mount Meru, Draupadi collapsed and died. Gradually, Sahadeva, Nakula, and Arjuna also collapsed one after another. As Bhima was also falling, he questioned Dharmaraja about the reason for collapsing. Dharmaraja replied Arjuna fell because of hollow boast and “you fall because of your gluttonously praising your own strength.” परबलम् अविज्ञायैव स्वबलश्लाघी answered Dharmaraja.

**Dharma Pareeksha:** At that moment, Lord Indra arrived in a celestial chariot and invited Dharmaraja to ascend to heaven in his mortal body. However, Dharmaraja stated that he would only come if his wife, brothers, and the dog accompanied him to share either heaven or hell. Indra countered, saying, “Your brothers and wife have already reached heaven. Leave this dog behind and come with me.” Dharmaraja refused, saying, “This dog did not abandon me even in my worst miseries. Deserting those who seek our refuge is a sin that leads to hell. आश्रितत्यागी नारकी स्यादिति न खुलु ।

**Yama Dharmaraja Praising Yudhishtira :** To reveal his true form to Dharmaraja, the dog shed its animal appearance, and Yama Dharmaraja stood before him. He praised him, saying, “My son! I am your father. I took the form of a dog just to test you. Your sense of equality and justice is truly great,” and helped Yudhishtira into the celestial chariot. Upon stepping into heaven, Dharmaraja saw Duryodhana looking like Indra, which filled him with anger, and he turned away. He then questioned Sage Narada about the whereabouts of his brothers.

**Dharmaraja in Hell :** A divine messenger told Dharmaraja, “O King! If you wish to see your family, come with me,” and led him along the path to hell. That path was filled with darkness, thorns, rocks, snakes, and insects. The ground was burning hot with sand, and the foul stench made it impossible to take even a single step forward. Dharmaraja cried out that he could go no further, but voices emerged from the darkness pleading, “O King! Please do not leave. Stay for a moment. Your mere presence alleviates our agonizing suffering. , दुःखिषुकरुणा हि महातां शैली । Showering compassion on those in grief is the way of the noble. Save us who are trapped in hell!” The voices called out one by one, identifying themselves: “I am Arjuna,” “I am Bhima,” and so on.

**The Praise of Lord Indra :** Distressed, Dharmaraja told the messenger, “Alas! If my people are to remain in hell, I will not come to heaven. Send the messenger away.” Immediately, the horrific scenes of hell vanished. Lord Indra appeared before him and explained, “O King! You are an Ajata Shatru. Since you once used a deceptive half-truth to overcome Dronacharya, you had to catch a glimpse of this hell as a consequence. Heaven is the fruit of good deeds, and hell is the fruit of sins. Now, enjoy the eternal comforts of heaven earned through the virtues of your Rajasuya and Ashvamedha sacrifices.”

**Dharmaraja Ascending to Heaven with Family :** Yama Dharmaraja embraced him affectionately and said, “My son! I am blessed to have a son like you. Your righteous character, which chooses to sacrifice personal luxury for the sake of those who seek your shelter, is praiseworthy in every possible way.” Afterward, with the blessings and permission of Lord Indra and Yama Dharmaraja, Yudhishtira reunited with his entire family and peacefully enjoyed the heavenly bliss.

आ) 'गद्यनैषधम्' इति पाठ्यभागस्य सारांशं लिखत ।

स. परिचयः 'गद्य नैषधम्' అనే పాఠ్యభాగం 'కవితా మయూఖాః' అనే సంకలన గ్రంథం నుంచి స్వీకరించబడింది.

దీనిని రచించినది శ్రీ చెరువు సత్యనారాయణశాస్త్రి గారు. వీరు శ్రీహర్ష మహాకవి రచించిన నైషధీయ చరితం నుంచి కథావస్తువును స్వీకరించారు.

నలుడి శాస్త్ర ప్రావీణ్యత: నిషధ దేశానికి రాజు నలమహారాజు. నలచరితం లోకపావనం. చతుర్దశ మహావిద్యలను అవధాన పద్ధతిలో అధ్యయనం చేశాడు. పాశాస్త్రంలో నలుడుకి ఎంతో నైపుణ్యం ఉంది. షడ్రుచులతో కూడిన ఆహారాన్ని భక్ష్య, భోజ్య, లేహ్యలుగా విభాగించాడు. త్రయీవ అఙ్గగృణై: అష్టాదశతాంగతా :। వేదాంగాలతో వేదం పరిపుష్టమైనట్లు, ఆ మూడు విభాగాలను 18 రకాల గుణాలతో పరిపుష్టం చేశాడు. అష్టదిక్పాలకుల అంశతో జన్మించినవాడు నలుడు. వారిలో ఉన్న సద్గుణాలన్నీ నలుడిని వరించాయి. చతుర్భిరపి పदै: సుకృతం స్థిరీకృతమ్ ।

నలుడి పరిపాలన: తన పరిపాలనలో నలుదిక్కులా ధర్మాన్ని స్థాపించాడు. నలుడి సైన్యం రేపిన దుమ్ము పాల కదలిలో పడింది. ఆ దుమ్ము చంద్రుడికి అంటుకుంది. అదే చంద్రుడిపై మచ్చలాగా మిగిలిపోయింది. నలుడి ప్రతాపం అగ్నిలాంటిది. శత్రురాజుల అపకీర్తులు కూడా ఆ అగ్నిలో పడి నల్ల బొగ్గులయ్యాయి. భూమి మీదున్న ఈతి బాధల్ని తరిమికొట్టాడు. నలుడి పరాక్రమానికి శత్రురాజులు హతమారిపోతుంటే వారి స్త్రీల కళ్ళు కన్నీటితో నిండిపోయాయి. ఘనవిజయాన్ని సాధించిన నలుడి కీర్తి దశ దిక్కులకు వ్యాపించింది. మిత్రజిత్ అపి అమిత్రజిత్ ।

నలుడి సుగుణాలు: నలుడు సద్గుణాలతో స్నేహితులను, పరాక్రమంతో శత్రువులను జయించాడు.

గూఢచారులున్నప్పటికీ గొప్ప ఆలోచనా దృష్టి ఉన్నవాడు నలుడు. ఒక రాజుగారికి ఎంత పరాక్రమం, ఎంత కీర్తి ఉండాలో అంతా కలిగినవాడు. దేశాన్ని సుభిక్షం చేశాడు. దరిద్రానికి చోటు లేకుండా చేశాడు. నలుడు ఎన్ని దానాలు చేసినా ఇంకా మేరుపర్వతమంత బంగారం అతని వద్ద ఉంది.

సూర్యుడి వంటి తేజస్సు నల మహారాజుడి. కవులతో, పండితులతో కాలక్షేపం చేస్తుంటాడు. అన్యాయాన్ని నిర్ణయంగా అణచివేస్తాడు. బ్రాహ్మణులనే (పాలన ప్రారంభించిన మొదట్లోనే) నలుడు జగత్తుని జయించాడు. కోశాగారాన్ని అక్షయం చేశాడు.

నలుడిని వరించిన దమయంతి: విదర్భరాజపుత్రి దమయంతి. ఆమె రూపంలో మన్మథుడినే జయించిన నలుడి గురించిన కథలు విన్నది. ఆమె మనస్సు అతడి పై లగ్నమైంది. ఈ శ్రీమహా విష్ణువుకి తగిన శ్రీదేవిని నేనే అనుకుని నిశ్చయించుకుంది. తండ్రి దగ్గర రాజుల గుణాల వర్ణన జరుగుతుంటే నలుడి పేరు వినగానే పులకించిపోయేది. సిగ్గుతో నలుడినే తలచుకుంటూ సంతోషపడేది. మనస్సులో నలుడినే భర్తగా వరించింది.

**स. Introduction:** The lesson titled “**Gadya Naishadham**” is extracted from an anthology named “**Kavita Mayukha**”. It was composed by **Sri Cheruvu Satyanarayana Sastri Garu**. He adapted the plot from the epic poem *Naishadhiya Charitam* written by the great poet Sri Harsha.

**Nala's Proficiency in Shastras:** King Nalamaharaju was the ruler of the Nishadha kingdom. The story of Nala purifies the world. He mastered the fourteen great branches of knowledge through the intensive method of *Avadhana*. In the culinary arts (*Pakashastram*), Nala possessed extraordinary skill. He meticulously categorized food that can be chewed, swallowed, licked, or sucked. त्रयीव अङ्गगुणैः अष्टादशतांगता :। Just as the Vedas are complete with their Vedangas, he enriched these three culinary categories with 18 distinct culinary qualities. Nala was born with the blessings of the guardian deities of the directions (*Ashtadikpalakulu*), and all their noble virtues manifested within him. चतुर्भिरपि पदैः सुकृतं स्थिरीकृतम् ।

**Nala's Administration :** During his reign, he established righteousness (*Dharma*) in all four corners of the world. The dust kicked up by Nala's marching army fell into the milk ocean. That dust reached the moon and remained upon it forever like a dark spot (*Macha*). Nala's majesty was like a raging fire; the ill-fame of enemy kings fell into that fire and turned into black charcoal. He banished all earthly miseries from his land. When enemy kings were destroyed by Nala's supreme valor, the eyes of their wives overflowed with tears. Achieving grand victories, Nala's fame spread across all ten directions. मित्रजित् अपि अमित्रजित् ।

**Nala's Noble Virtues (Naludi Sugunalu):** Nala won over friends with his noble virtues and conquered enemies with his outstanding valor. Despite having an extensive network of spies, Nala possessed a deeply profound analytical mind of his own. He embodied all the supreme valor and high glory that a true king ought to possess. He made his nation prosperous and left no room for poverty. No matter how many charities Nala performed, he still possessed gold as vast as Mount Meru. King Nala possessed a sun-like brilliance. He spent his leisure time in the company of poets and scholars. He ruthlessly suppressed injustice. In the very early days of ascending the throne, he conquered the world and made his treasury inexhaustible.

#### **Damayanti Choosing Nala (Naludni Varinchina Damayanti):**

Damayanti was the princess of Vidarbha. She had heard many stories about Nala, whose physical beauty surpassed even Manmatha (the God of Love). Her mind became entirely fixed on him. She firmly resolved that just as Goddess Lakshmi suits Lord Mahavishnu, she was the perfect match for Nala. Whenever her father discussed the virtues of various kings, her heart would flutter with excitement the moment Nala's name was mentioned. Filled with bashfulness, she constantly thought of Nala and accepted him as her husband in her heart.

IV. त्रयाः प्रश्नाः समाधेयाः ।

3 × 2 = 6

अ) कदा शकुन्तलायाः उत्सवः भवति ?

स. कुसुम प्रसूति समये शकुन्तलायाः उत्सवः भवति ।

---

आ) कः पापशङ्की ?

स. अतिस्नेहः पापशङ्की ।

---

इ) रघुमहाराजः किं यागं कृतवान् ?

स. रघुमहाराजः विश्वजिद्यागम् कृतवान् ।

---

ई) कौत्सः कियत् गुरुदक्षिणां दातुं गुरुणा आदिष्टः ?

स. कौत्सः चतुर्दशकोटि सुवर्ण मुद्राः दातुं गुरुणा आदिष्टः।

---

उ) इन्द्रः पथिकाय किं ददाति ?

स. इन्द्रः पथिकाय अमृतं ददाति ।

---

ऊ) देवानाम् अधिपः कः ?

स. देवानाम् अधिपः इन्द्रः ।

V. द्वयोः ससन्दर्भं व्याख्यात ।

2x3=6

अ) गुहां विविक्षुः प्रससार मेरोः ।

स. कवि परिचयः

पाठः 'विष्णुभक्तः अम्बरीषः'

कविः वेदव्यासः

ग्रन्थः श्रीमद्भागवतः।

सन्दर्भः दुर्वासं वर्णयन् कविः एवम् अवदत् ।

भावः दुर्वासं वर्णयन् कविः गुहां विविक्षुः प्रससार मेरोः इति अवदत् ।

आ) शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः ।

स. कवि परिचयः

पाठः कृष्णाप्रबोधः

कविः भारविः

ग्रन्थः किरातार्जुनीयम् ।

सन्दर्भः द्रौपदी धर्मराजं प्रति एवम् अवदत्।

भावःद्रौपदी धर्मराजं प्रति शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः इति अवदत् ।

इ) सस्यावृतो जीवन - जीवदायी ।

स. कवि परिचयः

पाठः ऋतुषट्कम्

कविः श्री ओगेटि परीक्षित् शर्मा

काव्यम् यशोधरा

सन्दर्भःऋतोः वर्णन समये कविः एवम् अवदत्।

भावः ऋतोः वर्णन समये कविः सस्यावृतो जीवन - जीवदायी इति अवदत् ।

ई) अद्योतयद्यं मणिदीपरूपः ।

स. कवि परिचयः

पाठः विवेकानन्दः

कविः सूर्यनारायणशास्त्री

काव्यम् विवेकानन्दम् ।

सन्दर्भः नरेन्द्रं वर्णयन् कविः एवम् अवदत् ।

भावः नरेन्द्रं वर्णयन् कविः अद्योतयद्यं मणिदीपरूपः इति अवदत् ।

VI. द्वयोः ससन्दर्भ व्याख्यात ।

2 × 3 = 6

अ) जितेन्द्रियत्वाद् ब्रह्मर्षिरसि ।

स. कविपरिचयः पाठः विश्वामित्रचरितं

कविः भोजः

काव्यम्: चम्पूरामायणम् ।

सन्दर्भः ब्रह्मा एवम् अवदत् ।

भावः ब्रह्मा जितेन्द्रियत्वाद् ब्रह्मर्षिरसि इति अवदत् ।

आ) परेषामपि रक्ष जीवितम् ।

स. कविपरिचयः पाठः दयावीरो विक्रमः

कविः वररुचिः

काव्यम् : सिंहासन द्वात्रिंशिका

सन्दर्भः विक्रमादित्यः एवम् अवदत्।

भावः विक्रमादित्यः परेषामपि रक्ष जीवितम् इति अवदत्।

इ) दुःखिषु करुणा हि महतां शैली ।

स. कवि परिचयः पाठः धर्मपरीक्षा

कविः श्री लक्ष्मणसूरिः ।

काव्यम् भारत सङ्ग्रहः ।

सन्दर्भः पाण्डवाः एवम् अवदत्।

भावः पाण्डवाः दुःखिषु करुणा हि महतां शैली इति अवदत्।

ई) मित्रजिदप्यमित्रजित् ।

स. कविपरिचयः पाठः गद्यनैषधम्

कविः श्री चेरुवु सत्यनारायण शास्त्री।

ग्रन्थः कवितामयूखाः।

सन्दर्भः कविः एवम् अवदत् ।

भावः कविः मित्रजिदप्यमित्रजित् । इति अवदत्।

VII. त्रयाः प्रश्नाः समाधेयाः ।

3 × 2 = 6

अ) दुर्वासाः कुत्र निममज्ज ?

स. दुर्वासाः कालिन्दी सलिले निममज्ज ।

आ) कीदृशं वचः दुर्लभम् ?

स. हितं मनोहारि च वचः दुर्लभम्।

इ) केषां वसुधैक कुटुम्बकम् भवति ?

स. उदारचरितानां तु वसुधैक कुटुम्बकं भवति ।

ई) धीमतां कालः कथं गच्छति ?

स. धीमतां कालः काव्यशास्त्रविनोदेन गच्छति ।

उ) ऋतुषट्कम् इति पाठ्यभागः कस्मात् काव्यात् स्वीकृतम् ?

स. ऋतुषट्कम् इति पाठ्यभागः यशोधरा महाकाव्यात् स्वीकृतम् ।

ऊ) नरेन्द्रः एकं पादं कुत्र निदधाति ?

स. नरेन्द्रः एकं पादं क्रीडाङ्गणेषु निदधाति।

## VIII. त्रयाः प्रश्नाः समाधेयाः ।

3 × 2 = 6

अ) शतानन्दस्य मातापितरौ कौ ?

स. शतानन्दस्य माता अहल्या । पिता गौतम महर्षिः ।

आ) बुधैः प्राणिनः कस्मात् त्रातव्याः ?

स. बुधैः प्राणिनः मृत्युभयात् त्रातव्याः ।

इ) कं दुस्स्वप्नमिव न स्मरति ?

स. दातारं दुस्स्वप्नमिव न स्मरति ।

ई) बाणभट्टः कस्य आस्थाने आसीत् ?

स. बाणभट्टः श्रीहर्षवर्धनस्य आस्थाने आसीत् ।

उ) "धर्मपरीक्षा" इति पाठ्यभागः कस्मात् स्वीकृतः ?

स. "धर्मपरीक्षा" इति पाठ्यभागः भारतसङ्ग्रहस्य महाप्रस्थान स्वर्गरोहणपर्वयोः स्वीकृतः ।

ऊ) कदा नलः जगज्जिगाय ?

स. शौशवे एव नलः जगत् जिगाय ।

IX. एकेन पदेन समाधेयः।

$5 \times 1 = 5$

अ) दुर्वासाः कां निर्ममे ?

स. कृत्यां ।

आ) मतङ्गजेन स्रगिव धर्मजेन का अपवर्जिता ?

स. मही । (राज्यम्)

इ) कृतमुपकारं के न विस्मरन्ति ?

स. साधवः ।

ई) शीतोष्णसमानदर्शी ऋतुः कः ?

स. हेमन्तऋतुः ।

उ) नरेन्द्रसाहचर्येण सहपाठिनः किं लभन्ते ?

स. मुदम् ।

X. एकेन पदेन समाधेयः।

$5 \times 1 = 5$

अ) कुशिकनन्दनः कः ?

स. विश्वामित्रः ।

आ) पर्वतसमीपे स्थितस्य नगरस्य नाम किम् ?

स. पलाशम्।

इ) तारापीडराजस्य प्रथिताभिधानः अमात्यवृषभः कः ?

स. शुकनासः ।

ई) देवपुर्या युधिष्ठिरः वासवमिव कं दृष्टवान् ?

स. दुर्योधनं ।

उ) नलः कीदृशं कोशं प्रणिनाय ?

स. अक्षयम् ।

## XI. अधो निर्दिष्ट कथां पाठित्वा प्रश्नां समाधानानि दत्त

5 × 1 = 5

कस्मिंश्चित् नगरे कश्चन निर्धनः ब्राह्मणः वसति स्म । सः भिक्षाटनेन जीवनं करोति स्म। कदाचित् सः पिष्टेन पूर्णम् एकं घटं प्राप्तवान् । तं घटं नागदन्ते अवलम्ब्य तस्य अधः उपविश्य सः एकदृष्ट्या घटमेव पश्यति स्म।

एकदा रात्रौ सः चिन्तितवान् - 'यदि देशे दुर्भिक्षं भवेत् तर्हि एतस्य शतरूप्यकाणां मूल्यं भवेत्। तदा अहम् एतत् विक्रीय तेन धनेन अजद्वये क्रेष्यामि । कालान्तरे तेन अजसमूहः एव भविष्यति । अनन्तरम् अजसमूहं विक्रीय धेनूः क्रेष्यामि। अनन्तरं ताः विक्रीय महीषीः ताः विक्रीय अश्वन् च क्रेष्यामि। तान् अपि विक्रीय यथेष्टं धनं सम्पदायिष्यामि। बृहत् गृहं निर्मापयिष्यामि। तदा कश्चिद् रूपवतीं स्वकन्यां मह्यं दास्यति। अनन्तरं मम पुत्रः जनिष्यते। देवशर्मा इति तस्य नामकरणं करिष्यामि। यदा सः जानुभ्यां चलितुं समर्थः भविष्यति, तदा देवशर्मा जानुभ्यां चलन् मम समीपम् आगन्तुम् उद्युक्तः भविष्यति। तदा तं बालं ग्रहीतुं तस्य मातरम् आज्ञापयिष्यामि। यदा सा मम वचनं न श्रोष्यति तदा अहं कोपेन पादप्रहारेण तां दण्डयिष्यामि'' इति।

प्रश्नाः

अ) कस्मिंश्चित् नगरे कः वसति स्म?

सः कस्मिंश्चित् नगरे कश्चन निर्धनः ब्राह्मणः वसति स्म ।

आ) निर्धनः केन जीवनं करोति स्म?

सः निर्धनः भिक्षाटनेन जीवनं करोति स्म ।

इ) ब्राह्मणः किं प्राप्तवान्?

सः ब्राह्मणः पिष्टेन पूर्णम् एकं घटं प्राप्तवान् ।

ई) देवशर्मा काभ्यां चलितुं समर्थः भविष्यति?

सः देवशर्मा जानुभ्यां चलितुं समर्थः भविष्यति?

उ) पिष्टेन पूर्णः घटः किम् अभवत्?

सः पिष्टेन पूर्णः घटः पतितः भग्नः च अभवत् ।

## XII. त्रीणि सन्धिनामनिर्देशपूर्वकं सन्धत्त।

3 × 2 = 6

अ) सद् + जनः      आ) उद् + डयनम्      इ) षट् + आननः

ई) जगत् + नाथः      उ) कः + अपि      ऊ) नृपतिः + जयति

स. (अ) सञ्जनः - श्चुत्वसन्धिः

स. (आ) उड्डयनम् - ष्टुत्वसन्धिः

स. (इ) षडाननः - जश्त्वसन्धिः

स. (ई) जगन्नाथः - अनुनासिकसन्धिः

स. (उ) कोऽपि - विसर्गसन्धिः

स. (ऊ) नृपतिर्जयति - विसर्गरेफादेशसन्धिः

## XIII. नामनिर्देशपूर्वकं त्रीणि विघटयत।

3 × 2 = 6

अ) जगज्जननी      आ) रामषष्टः      इ) तदपि

ई) षण्मुखः      उ) रामोऽपि      ऊ) हरिर्गच्छति

स. (अ) जगद् + जननी - श्चुत्वसन्धिः

स. (आ) रामस् + षष्टः - ष्टुत्वसन्धिः

स. (इ) तत् + अपि - जश्त्वसन्धिः

स. (ई) षट् + मुखः - अनुनासिकसन्धिः

स. (उ) रामः + अपि - विसर्गसन्धिः

स. (ऊ) हरिः + गच्छति - विसर्गरेफादेशसन्धिः

## XIV. द्वयोः शब्दयोः सविभक्तिकं रूपाणि लिखत।

2 × 6 = 12

अ) मरुत् आ) स्रज् इ) महत् ई) एतद्

अ) तकारान्तः पुंलिङ्गः 'मरुत्' शब्दः (వాయువు)(Air)

| एकवचनम्  | द्विवचनम्   | बहुवचनम्  | विभक्तिः              |
|----------|-------------|-----------|-----------------------|
| मरुत्    | मरुतौ       | मरुतः     | प्रथमाविभक्तिः        |
| हे मरुत् | हे मरुतौ    | हे मरुतः  | सम्बोधनप्रथमाविभक्तिः |
| मरुतम्   | मरुतौ       | मरुतः     | द्वितीयाविभक्तिः      |
| मरुता    | मरुद्भ्याम् | मरुद्भिः  | तृतीयाविभक्तिः        |
| मरुते    | मरुद्भ्याम् | मरुद्भ्यः | चतुर्थीविभक्तिः       |
| मरुतः    | मरुद्भ्याम् | मरुद्भ्यः | पञ्चमीविभक्तिः        |
| मरुतः    | मरुतोः      | मरुताम्   | षष्ठीविभक्तिः         |
| मरुति    | मरुतोः      | मरुत्सु   | सप्तमीविभक्तिः        |

आ) जकारान्तः स्त्रीलिङ्गः 'स्रज्' शब्दः (పూలదండ)(Garland)

| एकवचनम्  | द्विवचनम्   | बहुवचनम्  | विभक्तिः              |
|----------|-------------|-----------|-----------------------|
| स्रक्    | स्रजौ       | स्रजः     | प्रथमाविभक्तिः        |
| हे स्रक् | हे स्रजौ    | हे स्रजः  | सम्बोधनप्रथमाविभक्तिः |
| स्रजम्   | स्रजौ       | स्रजः     | द्वितीयाविभक्तिः      |
| स्रजा    | स्रग्भ्याम् | स्रग्भिः  | तृतीयाविभक्तिः        |
| स्रजे    | स्रग्भ्याम् | स्रग्भ्यः | चतुर्थीविभक्तिः       |
| स्रजः    | स्रग्भ्याम् | स्रग्भ्यः | पञ्चमीविभक्तिः        |
| स्रजः    | स्रजोः      | स्रजाम्   | षष्ठीविभक्तिः         |
| स्रजि    | स्रजोः      | स्रक्षु   | सप्तमीविभक्तिः        |

इ) तकारान्तः नपुंसकलिङ्गः 'महत्' शब्दः (గొప్పది)(Great)

| एकवचनम् | द्विवचनम्  | बहुवचनम्   | विभक्तिः              |
|---------|------------|------------|-----------------------|
| महत्    | महती       | महान्ति    | प्रथमाविभक्तिः        |
| हे महत् | हे महती    | हे महान्ति | सम्बोधनप्रथमाविभक्तिः |
| महत्    | महती       | महान्ति    | द्वितीयाविभक्तिः      |
| महता    | महद्भ्याम् | महद्भिः    | तृतीयाविभक्तिः        |
| महते    | महद्भ्याम् | महद्भ्यः   | चतुर्थीविभक्तिः       |
| महतः    | महद्भ्याम् | महद्भ्यः   | पञ्चमीविभक्तिः        |
| महतः    | महतोः      | महताम्     | षष्ठीविभक्तिः         |
| महति    | महतोः      | महत्सु     | सप्तमीविभक्तिः        |

ई) दकारान्तः पुलिङ्गः 'एतद्' शब्दः (ఇతడు)(This Man)

| एकवचनम्     | द्विवचनम्   | बहुवचनम्      | विभक्तिः         |
|-------------|-------------|---------------|------------------|
| एषः         | एतौ         | एते           | प्रथमाविभक्तिः   |
| एतम् / एनम् | एतौ/ एनौ    | एतान् / एनान् | द्वितीयाविभक्तिः |
| एतेन / एनेन | एताभ्याम्   | एतैः          | तृतीयाविभक्तिः   |
| एतस्मै      | एताभ्याम्   | एतेभ्यः       | चतुर्थीविभक्तिः  |
| एतस्मात्    | एताभ्याम्   | एतेभ्यः       | पञ्चमीविभक्तिः   |
| एतस्य       | एतयोः/एनयोः | एतेषाम्       | षष्ठीविभक्तिः    |
| एतस्मिन्    | एतयोः/एनयोः | एतेषु         | सप्तमीविभक्तिः   |

## XV. समास नामनिर्देशपूर्वकं त्रयाणां विग्रहवाक्यानि लिखत।

3 × 2 = 6

अ) शिवकेशवौ

आ) नवरात्रम्

इ) शाकप्रति

ई) उत्तरकायः

उ) विन्ध्यपर्वतः

ऊ) सहपुत्रः

स. (अ) शिवः च केशवः च

द्वन्द्वसमासः

स. (आ) नवानां रात्रीणां समाहारः

द्विगुसमासः

स. (इ) शाकस्य लेशः

अव्ययीभावसमासः

स. (ई) उत्तरं कायस्य

प्रथमातत्पुरुषसमासः

स. (उ) विन्ध्य इति पर्वतः

सम्भावनपूर्वपदकर्मधारयसमासः

स. (ऊ) पुत्रेण सह वर्तते इति

सहपूर्वपदबहुव्रीहिसमासः

## XVI. अधोनिर्दष्टपट्टिकामाधारीकृत्य पञ्चसाधुवाक्यानि लिखत

5 × 1 = 5

|      |        |        |
|------|--------|--------|
| भरतः | फलं    | खादामि |
| सा   | पाठं   | पठसि   |
| त्वं | चित्रं | पश्यति |
| अहं  | देवं   | पिबति  |
| लता  | क्षीरं | पूजयति |

- 1) भरतः चित्रं पश्यति।
- 2) भरतः देवं पूजयति।
- 3) भरतः क्षीरं पिबति।
- 4) सा चित्रं पश्यति।
- 5) सा देवं पूजयति।
- 6) सा क्षीरं पिबति।
- 7) अहं फलं खादामि।
- 8) त्वं पाठं पठसि।
- 9) लता चित्रं पश्यति।
- 10) लता देवं पूजयति।
- 11) लता क्षीरं पिबति।